Annexure VII CAT III (A) (Page-13) contd.
Date of Publication of Paper — Jun 201
Reference UGC Approved list of journals
UGC-CARE list of journals 2022

97

संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

ISSN 0975-735X
UGC Approved
Impact Factor 3.471

शोध दिशा

45

Research Journal is indexed in the
International Innovative Journal Impact Factor (IIJIF) database.

International
Innovative Journal
Impact Factor (IIJIF)

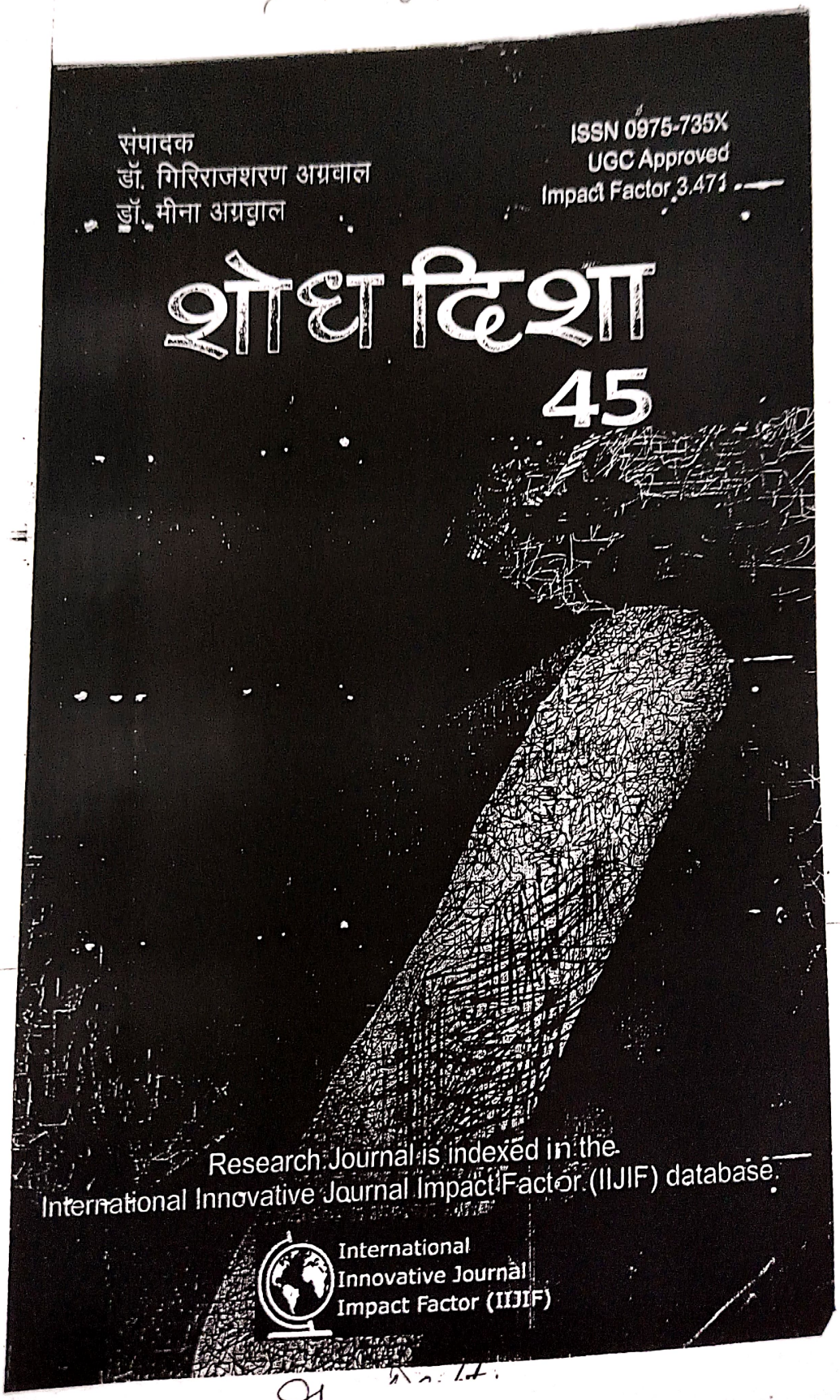

28/107

81

Annexure VII CAT III (A)
(Page - 14) Cont.

शोध दिशा

ISSN 0975-735X
Impact Factor 3.471

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका : केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त पत्रिका (41387)

शोध अंक 45 जून 2019 200.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰)
फोन : 01342-263232, 07838090732
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ॰ मीना अग्रवाल
बी-203, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन॰सी॰आर॰
डॉ॰ अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

प्रबंध संपादक
डॉ॰ मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ॰ शंकर क्षेम

डॉ॰ रश्मि त्रिवेदी

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ॰ अनुभूति

उपसंपादक
डॉ॰ अशोककुमार 09557746346

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी॰ए॰

शुल्क
आजीवन (दस वर्ष): व्यक्तिगत : पाँच हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : छह सौ रुपए
यह प्रति : तीन सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

82

Drishti

Annexure VIII CAT-III(A)
(Page-1) Cont.

अनुक्रम

तीसरी योनि और तीसरी ताली का सच/ डॉ॰ रमेशकुमार	19
ब्रटिश प्रतिकारमूलक भारतीय नवजागरण के प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद/ डॉ॰ अशोक उपाध्याय	29
नागार्जुन और उनके काव्य में व्यंग्य/ रेणु यादव	38
उदयप्रकाश की कहानी तिरिछ : संवेदना और शिल्प/ रीतु, डॉ॰ मुदुल जोशी	44
साहित्यिक चिंतन और उत्तर-मध्यकाल/ कपिलकुमार गौतम, प्रो॰ चंदा बैन	50
नाट्य रूपक के परिप्रेक्ष्य में उषा सक्सेना के रेडियो नाटक/ डॉ॰ सदानंद भोसले राजेंद्र विट्ठल वरपे	60
हिंदी आत्मकथा का इतिहास तथा विकास/ सकीना अख्तर	67
समसामयिक हिंदी साहित्य में मानवाधिकार : स्त्री-समस्याओं का चित्रण (चित्रा मुद्गल के कथासाहित्य में)/ प्रवितालक्ष्मी	74
भारतीय सिनेमा व रंगमंच का अंतर्संबंध/ डॉ॰ कुमार चैतन्य प्रकाश	81
भक्ति-आंदोलन क्यों और कैसे?/ हरिओम कुमार द्विवेदी	86
संशय की एक रात/ रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'	90
शीतयुद्ध की सांस्कृतिक रणनीति और मुक्तिबोध की आलोचना-दृष्टि/ डॉ॰ नीताकुमारी	94
21वीं सदी के भारत का विद्रूप यथार्थ : मोहनदास/ निवेदिता प्रसाद	105
सुभाषचंद्र बोस का राजनीतिक व्यक्तित्व और चिंतन/ डॉ॰ नीलू कपूर	110
हिंदीभाषा में लिखे गए सिनेमा गीतों में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का विश्वस्तरीय गौरवगान/ डॉ॰ चंद्रकांत मिसाल	115
राजनीति, धर्म और सांप्रदायिकता का गठजोड़ : अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों के विशेष संदर्भ में/ डॉ॰ अभिषेककुमार पांडेय	122
प्रसाद और तांबे के काव्य में नारी-चित्रण/ डॉ॰ अनंत नानाजी केदारे	125
नयी कविता में आधुनिकता का बोध व स्वरूप/ डॉ आशा बिष्ट	135
[redacted]	139
'आधे-अधूरे' एक मध्यवर्गीय परिवार की गाथा/ जयराम गाडेकर	142
अमरकांत के कथा-संसार में मध्यवर्ग का चित्रण/ किरन चौरसिया	149
'मन माटी' विविध समस्याओं व प्रवासियों की पीड़ा का संसार/ माया देवी	152
वेदों में सृष्टि की उत्पत्ति-संबंधी अवधारणा/ डॉ॰ मृदुल जोशी	158
आदिवासी बिरसा के जीवन की सशक्त अभिव्यक्ति : जंगल के दावेदार/ डॉ॰ रत्ना कुशवाह	164

ISSN 0975-735X

29/107 83

[redacted] Annexure VII CAT III(A) Page 1 Cont

शिक्षा जगत् के रहस्य

(डॉ॰ मधु संधु की कहानियों का संदर्भ)

डॉ॰ दीप्ति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिंदू कॉलेज, अमृतसर (पंजाब)

साहित्यकार कलाकार की भाँति होता है और उसकी हर रचना में रचनात्मकता मूर्त होती है। किसी भी सीमा में रचनात्मकता बाँधी नहीं जा सकती। लेखिका डॉ॰ मधु संधु की रचनाओं और जीवनदृष्टि में भी यही सर्जनात्मकता परिलक्षित होती है। उनकी रचनाएँ मानवीय चेतना से जुड़ी हैं। जीवन के संचित अनुभवों पर आधारित दृष्टिकोण उनकी रचनाओं में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

यहाँ उनके कहानी-संग्रह 'दीपावली/अस्पताल.कॉम' में संकलित लघु कहानियों-हिंदी दिवस, फटकार, पहियाजाम, अवार्ड, विमोचन तथा असिस्टैंट को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत कहानियों में उच्च शिक्षाजगत् में समाहित लोभ, क्रूरता, बनावटीपन, स्वार्थपरता तथा भ्रष्टाचार आदि को रेखांकित किया गया है।

'हिंदी दिवस' में इस कटु यथार्थ को दर्शाया गया है कि हिंदी दिवस अर्थात् 14 सितंबर को क्या वास्तव में उसके उत्थान व प्रगति के लिए सच्चे प्रयास होते हैं? क्या हिंदीभाषा को पूरे देश अर्थात् राष्ट्र की भाषा मानने एवं बनाने को हिंदी विद्वजन दृढ़ संकल्प हैं?

राजधानी में हिंदी दिवस के आयोजन में देश के विभिन्न राज्यों से हिंदी संस्थानों के मुखिया, विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्वान एवं हिंदी विभागाध्यक्ष एकत्रित होकर हिंदी दिवस की शोभा बढ़ाते हैं और सभी प्रांतीय विद्वान अपने-अपने प्रांतों के विद्वानों के रचे गए ग्रंथों को ही बहुमूल्य बताकर हिंदी साहित्य को समृद्ध घोषित करते हैं। भले ही वे साथ में हिंदी के महाकाव्य 'रामचरितमानस' को जोड़ने की अनिवार्यता को समझते हैं। 'पंजाब के प्रतिनिधि ने ठोक-बजाकर कहा–'हिंदीभाषा जब तक जीवित रहेगी, तब तक रामचरितमानस और गुरुग्रंथ साहिब हैं। इन अमर कृतियों के कारण हिंदी भी अमर रहेगी।"

जो भाषा पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने की सामर्थ्य रखती है, जिसके पास समृद्ध रचनाओं का अमूल्य कोष है, उसे उसके संपन्न रूप में न देखकर तथाकथित एकत्रित विद्वजन खंड-खंड रचनाओं को ही महत्त्वपूर्ण बताकर अपने संकुचित दृष्टिकोण का परिचय देते हैं। 'राजस्थान के एक विद्वान ने कहा–'हिंदी के महिला साहित्य का सूत्रपात मीराबाई से होता है। मीरा विश्व की प्रथम विद्रोहिणी थी। पहली फेमिनिस्ट थीं। उसके कारण यह आधी दुनिया का प्रतिनिधित्व करता है।"[2]

आधुनिक लेखक अपनी सार्थक व उद्देश्यपूर्ण कृतियों के माध्यम से प्रसिद्धि पाने की अपेक्षा पुस्तक के विमोचन द्वारा प्रसिद्धि तथा प्रमोशन पाने के लिए लालायित रहता है। 'फटकार'

84
Deepti

Annexure VII CAT III (A) (Page -17) cont.

कहानी इसी कटु यथार्थ को रेखांकित करती है। प्रस्तुत कहानी में पत्नी पति से पुस्तक विमोचन का आयोजन करने को कहती है। उसका कहना है, 'विमोचन से प्रसिद्धि मिलेगी, प्रसिद्धि से प्रमोशन और प्रमोशन से योग्यता का लेबल।'[3] वह पति को पच्चीस हजार का रिफरैशमैंट और आनरेरियम का खर्च अरेंज करने का दबाव डालती है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी के माध्यम से प्रसिद्धि और प्रमोशन पाने के निम्न मापदंडों को चिह्नित किया गया है।

'पहिया जाम' कहानी हमारे तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार की गंभीर समस्या पर प्रकाश डालती है। विभाग का क्लर्क अपने अफसरों के रुके हुए काम करवाने के कौशल में निपुण था। कभी किसी अफसर के भानजे के परीक्षा-परिणाम पता करता तो कभी विद्यार्थी की दबी माईग्रेशन फाइल मूव करवा देता। 'गुप्ता सर के तीन बिल ऑडिट में फँसे थे। ...ऑडिट वालों का इंतजाम करके आया था। उसे सब रेट मालूम थे। बंद लिफाफा ही साहब के पेपर वेट के नीचे रखा और फाइल को पहिए लग गए।'[4]

इसप्रकार अलादीन के चिराग की भाँति सभी का काम करवाकर अपनी जेबें भी भर लेता। एक दिन बॉस के द्वारा पकड़े जाने पर उसने मिन्नत-चिरौरी की और नौकरी बचा ली, परंतु अब उसके बिना विभाग का पहिया जाम हो गया था। आज कोई भी विभाग हो, हर तरफ भ्रष्टाचार एवं रिश्वतखोरी दीमक की भाँति हमारी जड़ों को खोखला कर रही है। अपनी मुट्ठी को गर्म किए बिना किसी का काम न करना आज का चलन हो गया है। प्रस्तुत कहानी में इस समस्या को बखूबी रेखांकित किया गया है।

'अवार्ड' कहानी विश्वविद्यालयों के शोधार्थी के शोषण को रेखांकित करती है। 'एम॰एससी॰ के आठवें पेपर यानी प्रोजेक्ट के लिए उसे दिन-रात एक करना पड़ा। ...लैब में बारह-बारह घंटे की सिटिंग दी। जूनियरर्स की चिरौरी करते उन पर एक्सपेरिमेंट किए। ढेरों प्रेजेंटेशंज बनाए। टाइपिंग, प्रेजेंटेशंज, बार-बार एडिटिंग बस एक ही इच्छा थी, काम सुपर हो।'[5]

विद्यार्थी के रिसर्च पेपर को डॉ॰ गिल पहले अपने नाम से तथा दूसरे रिसर्चर अर्थात् शोधार्थी के नाम से अमेरिका भेज देते हैं, परंतु बाद में जब अवार्ड लेने की बात आती है तो वह डॉ॰ राने अर्थात् अध्यक्ष को मिलता है। सब जगह-अखबारों टी॰वी॰, प्रेस में भी उनका नाम चमक रहा था। इस प्रकार शोधार्थी के कठिन परिश्रम का रिवार्ड कोई अन्य ही ले जाता है। प्रस्तुत कहानी में तंत्र में व्याप्त शोषण स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है, जिसका शिकार शोधार्थी स्वयं को असहाय एवं विवश अनुभव करता है।

'विमोचन' कहानी में एक इनकम टैक्स आफिसर के साहित्यकार बनने की यात्रा का व्यंग्य निहित है। एक इनकम टैक्स ऑफिसर अपनी रद्दी की कोठरी में से पुरानी रचनाओं को निकालकर छपवा लेता है और उस पुस्तक के भव्य विमोचन का आयोजन करता है। ओबराय होटल में वाइस चांसलर की अध्यक्षता, मुख्यातिथि सैशन जज, वकील, प्रोफेसर, गजेटिड आफिसर पत्नियों साथ समारोह की शोभा बढ़ाते हैं। 'अगली सुबह के समाचारपत्रों ने उन्हें साहित्यकारों की प्रथम पंक्ति में बिठा दिया। सिटी चैनल्ज ने कवरेज दी।'[6]

प्रस्तुत कहानी आधुनिक युग में पुस्तक के भव्य विमोचन की महत्ता को उजागर करती है। आज किसी भी रचनाकार द्वारा प्रसिद्धि पाने के लिए श्रेष्ठ रचना लिखना ही पर्याप्त नहीं, अपितु आधुनिकयुग के भौतिकवादी वातावरण में पुस्तक का भव्य विमोचन ही उसे श्रेष्ठ साहित्यकारों की

ISSN 0975-735X

85

Deepti

पंक्ति में खड़ा कर देने के लिए पर्याप्त है। इसप्रकार प्रस्तुत कहानी पदार्थवादी दृष्टिकोण से ग्रस्त समाज के खोखलेपन को उजागर करती है।

'असिस्टैंट' कहानी एक नवनियुक्त साहब के रुआब व अफसरी के खुमार को भलीभाँति रेखांकित करती है। 'कुर्सी पर बैठते ही रीढ़ तन गई। साहब साहब के अनवरत संबोधन से चेहरे पर रुआब आ गया। ...आकाश की ऊँचाइयों को छू लेने का आत्मगौरव उन्हें बाँध रहा था।" भले ही असिस्टैंट उन्हें उचित मार्गदर्शन व दिशा निर्देश में फाइलों का काम संपूर्ण करवा रहा था। प्रस्तुत कहानी अफसरी की अकड़ से गौरवान्वित नौकरशाही के कृत्रिम अहं को उजागर करती है।

लेखिका की उपर्युक्त लघु कहानियाँ संवेदना रहस्य रूपी धुंध बनाती है, जिससे पाठक की जिज्ञासा बढ़ती है। तत्पश्चात् पाठक को तथ्य से अवगत करवाकर कहानी में रोचकता का सन्निवेश करती है। प्रस्तुत कहानियों का सत्य लेखिका की अनुभूति पर प्रकाश डालता है। इन कहानियों में बहुत ही सजगता से शिक्षा-जगत् के यथार्थ के भिन्न पहलुओं के जीवंत चित्रण परिलक्षित हैं जिससे पाठक पात्रों से जुड़कर विचलित अनुभव करने पर विवश हो जाता है। लेखिका तर्कशक्ति के साथ भाषा गढ़ने में सिद्धहस्त है। संवेदना की गहराई, अनुभूति की सच्चाई और नूतन अभिव्यक्ति शैली इनकी लघु कहानियों की विशेष पहचान है।

संदर्भ

1. डॉ॰ मधु संधु, दीपावली/अस्पताल.कॉम, हिंदी दिवस, अयन प्रकाशन, नई दिल्ली 2015, पृ॰ 108
2. वही, पृ॰ 108
3. वही, पृ॰ 115
4. डॉ॰ मधु संधु, दीपावली/अस्पताल.कॉम, पहिया जाम, पृ॰ 116
5. डॉ॰ मधु संधु, दीपावली/अस्पताल.कॉम, अवार्ड, पृ॰ 120
6. डॉ॰ मधु संधु, दीपावली/अस्पताल.कॉम, विमोचन, पृ॰ 121
7. डॉ॰ मधु संधु, दीपावली/अस्पताल.कॉम, असिस्टैंट, पृ॰ 127

मो॰ 9501077702

ISSN 0975-735X